Marking Scheme

BSEH Practice Paper (March-2024)

CLASS: 10th (Secondary) (Maximum Marks: 20) **Code: D**

हिंदुस्तानी संगीत गायन

(Hindustani Music Vocal)

खंड (1) वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न

Section (1) Objective type questions

(½ X 10 = 05)

....

प्र01 जिन रागों में किसी और राग की छाया नहीं आती हैं? ½

उ0 **(A)** शुद्ध राग

प्र02 जिन रागों में शुद्ध और छायालग रागों का मिश्रण मिलता हैं? ½

उ0 (C) सकींर्ण राग

प्र0 3 लक्षण गीत से ....का पूरा परिचय मिलता है। ½

उ0 राग का

प्र0 4 ....से स्वरों का अभ्यास भी हो जाता है। ½

उ0 सरगम गीत

प्र0 5 अभिकथन **(A):** ताल में सम के स्थान पर हाथ से ताली बजाई जाती हैं। ½

कारण **(R):** ताल में सम का चिह्न पहली मात्रा पर आता हैं।

उ0 **(A)** **A** और **R** दोनों सत्य हैं तथा **R**, **A** की सही व्याख्या है।

प्र0 6 अभिकथन **(A):** एक ताल में 12 मात्राएं होती हैं। ½

कारण **(R):** एक ताल में पाँच विभाग होते हैं।

उ0 (C) **A** सत्य है परंतु **R** असत्य हैं।

प्र0 7 ½

कॉलम – 01	कॉलम – 02
A. तानपूरे का पहला तार मिलाया जाता है	1. मंद्र सा
B. तानपूरे का दूसरा तार मिलाया जाता है	2. मध्य सा
C. तानपूरे का तीसरा तार मिलाया जाता है	3. मध्य सा
D. तानपूरे का चौथा तार मिलाया जाता है	4. मंद्र प

उ0 (2) **A-4 B-3 C-2 D-1**

Download from www.MsEducationTv.com

प्र0 8

कॉलम – 01	कॉलम – 02
A. एक ताल	1. 06
B. चौताल	2. 07
C. रूपक ताल	3. 12
D. एक ताल विभाग	4. 12

½

उ0 (4) **A-4 B-3 C-2 D-1**

प्र0 9 तानपूरे में सात तारें होती हैं। (सही /गलत) ½

उ0 गलत

प्र0 10 उत्तरी भारतीय संगीत स्वरलिपि का श्रेय पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर को जाता हैं। (सही/गलत) ½

उ0 गलत

खंड (2) अति लघुउत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (2) Very short answer type questions

(½ **X 08** = **04**)

प्र0 11 राग वृन्दावनी सांरग का थाट का नाम बताएं? ½

उ0 काफी

प्र0 12 उत्तरी भारतीय संगीत में किसकी स्वरलिपि पद्वति अधिक प्रचलित हैं? ½

उ0 पं0 विष्णु नारायण भातखण्ड़े जी

प्र0 13 रूपक ताल में कितने बोल होते है? ½

उ0 07

प्र0 14 एक ताल में कितनी ताली हैं? ½

उ0 04

प्र0 15 चौताल में कितने बोल हैं। ½

उ0 12

प्र0 16 उत्तरी भारतीय संगीत मे मींड का क्या चिह्न हैं। ½

उ0 दो से अधिक स्वरों के ऊपर उल्टा अर्द्धचंद्र (गमपध)

Download from www.MsEducationTv.com

प्र0 17 उत्तरी भारतीय संगीत मे दो गुन का क्या चिह्न है? ½

उ0 दो स्वरों या दो बोलों के नीचे अर्द्धचंद्र

प्र0 18 उत्तरी भारतीय संगीत मे मध्य सप्तक के स्वरों के क्या चिह्न हैं ? ½

उ0 कोई नहीं

खंड (3) लघुउत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (3) short answer type questions

(2 X 03 = 06)

प्र0 19 पं जसराज के जीवन परिचय बारे वर्णन करें। 2

उ0 पं जसराज के जन्म व निधन तिथि के साथ उनके जन्म स्थान, माता–पिता और उनकी गायकी के बारे में बताने पर पूरे अंक दिये जायें।

पं. जसराज का जन्म 20 जनवरी 1930 को हिसार में हुआ। संगीत इनको विरासत से मिला हुआ था। ये कश्मीर राज्य के दरबारी गायक पं. मोतीराम के पुत्र थे। संगीत इनको विरासत में मिला हुआ था। सन् 1934 में इनके पिता का देहांत हो गया तो परिवार का संपूर्ण भार इनके सबसे बडें भाई पंडित मणिराम घराने के श्रेष्ठ गायक थे। अतः इन्होनें अपने मंझले भाई पंडित प्रताप नारायण को गायन और चार–वर्षीय जसराज को तबले की शिक्षा देना प्रांरभ कर दिया। जसराज जल्दी ही तबले मे निपुण हो गए ओर पंडित मणिराम के गायन के साथ तबला संगति करने के लिए संगीत–समाराहों मे जाने लगे। लेकिन बाद में उनकी रूची गायन में अधिक हो गई। जब पंडित मणिराम को इस बात का पता लगा तो विशाल दृष्टिकोण अपनाते हुए उन्होनें पुत्र सम्मान जसराज को गायन की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया। सन 1950 में जसराज आकाशवाणी पर अपना कार्यक्रम देने के अलावा अपने गुरू तथा बड़े भाई पं. मणिराम के साथ संगीत सम्मेलनों में गायन की जुगलबंदी भी प्रस्तुत करने लगे। पं. जसराज का विवाह प्रसिद्ध फिल्म निर्माता–निर्देशक शांतराम की पुत्री मथुरा के साथ हुआ। ये सन् 1963 में स्थायी रूप से बम्बई जाकर बस गए। इनका निधन 17 अगस्त 2020 में हुआ जिससे संगीत जगत् को बहुत बडी हानि हुई।

(अथवा)

(OR)

प्र0 19 किशोरी अमोनकर के जीवन परिचय बारे वर्णन करें।

उ0 किशोरी अमोनकर के जन्म व निधन तिथि के साथ उनके जन्म स्थान, माता–पिता और उनकी गायकी के बारे में बताने पर पूरे अंक दिये जायें।

किशारी अमोनकर एक प्रमुख भारतीय शास्त्रीय गायिका थी। हिन्दुस्तानी परम्परा में अग्रणी गायिकाओं में से एक माना जाता है। किशोरी अमोनकर जी का जन्म 10 अप्रैल 1932 को मुबंई में हुआ। किशोरी अमोनकर को हिन्दुस्तानी संगीत की अग्रणी गायिकाओं में से एक माना जाता है। अमोनकर ने अपनी माता से ठुमरी, ख्याल और भजनों की शास्त्रीय संगीत की शिक्षा हासिल की। अमोनकर की माता जानी–मानी गायिका मोधुबाई कुर्दीकर थी। उन्होनें जयपुर घराने के दिग्गज गायक अल्लादिया खान साहब से प्रशिक्षण हासिल किया। अपनी माँ से जयपुर घराने की तकनी और बारीकियों को सीखने के दौरान अमोनकर ने अपनी खुद की शैली विकसित की। जिस पर अन्य घरानों का प्रभाव भी दिखता है। उन्हें मुख्य रूप से ख्याल गायकी के लिए जाना जाता है। उन्होनें ठुमरी, भजन और भक्ति गीत और फिल्मी गाने भी गाए। सन् 1960 से 70 के दशक में शास्त्रीय गायिका के रूप में

Download from www.MsEducationTv.com

अमोनकर का कैरियर बढ़ गया। इन्हें आई टीसी संगीत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कला के क्षेत्र में योग्यता के लिए इन्हें 1985 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2009 संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप, 1987 में पदम भूषण व 2002 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

मशहूर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायिका किशोरी अमोनकर का 03 अप्रैल 2017 को मुबई में निधन हो गया। वह 84 वर्ष की थी।

प्र0 20 संगीत ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' का सम्पूर्ण परिचय दे। 2

उ0 संगीत ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' किसने और कब लिखा तथा इसमें संगीत के बारे में क्या–क्या वर्णन किया गया है के बारे पूरा बताने पर पूरे अंक दिये जायें।

चौथी शताब्दी के लगभग भरतमुनि ने नाटयशास्त्र नामक ग्रन्थ लिखा। संगीत के इतिहास में यह पहला ऐसा ग्रन्थ है, जिसके अन्तिम छः अध्यायों में संगीत सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अन्तर्गत वर्णित अधिकांश तथ्य आज भी शत–प्रतिशत सही माने जाते हैं। नाट्य शास्त्र के 28वें अध्याय में वाद्यों के प्रकार श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति–भेद तथा उनके लक्षण ग्रह, अंश, न्याय, उपन्यास, अलपत्व, बहुत्व, षाडवत्व, औडवत्व आदि पर प्रकाश डाला गया है। 29वें अध्याय में वीणा, उनकी वादन–विधि जातियों के रसानुकूल प्रयोग का विवरण है। 30वें अध्याय में सुषिर वाद्यों का विवरण, 31वें अध्याय में कला, लय और विभिन्न तालों का विवरण दिया गया हैं। 32वें अध्याय में गायक–वादक के गुण ध्रव के 5 भेद, छनद आदि तथा 33वें अध्याय में अवनद्ध वाद्यों की उत्पति, भेद, वादन–विधि, वादकों के लक्षण आदि दिए गए है। इस प्रकार इन 06 अध्यायों में संगीत सम्बधीं जानकारी पूर्ण रूप से प्राप्त करवाने में संगीत ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' की बहुत महत्वता है।

प्र0 21 तानपूरे का चित्र बनाकर उसके अंगों का विवरण दें। 2

उ0 तानपूरे के सभी अगों के नाम के साथ चित्रण करते हुए वर्णन करने पर पूरे अंक दिये जाये।

तानपूरे की परिभाषा देते हुए इसके 12 अगों –तुंबा, डांड, तबली, ब्रिज अथवा घोडी, सूत अथवा धागा, कील अथवा लंगोट, गुल अथवा गुल्लु, अटी, तार गहन, खूँटियाँ, तार तथा मनका आदि के बारे में तानपूरे का चित्र बनाने पर पूरे अंग दिये जाये।

Download from www.MsEducationTv.com

खंड (4) दीर्घ उत्तरात्मक प्रकार के प्रश्न

Section (4) Long answer type questions

(2½ X 2 = 05)

...

प्र0 22 राग भीमप्लासी का शास्त्रीय परिचय लिखें और राग भीम प्लासी का छोटे ख्याल को स्वरलिपिबद्ध करें।

(2½ + 2½) = 05

उ0 शास्त्रीय परिचय में थाट, गायन समय, जाति, वादी–संवादी, आरोह–अवरोह, पकड आदि के स्वर बताने पर पूरे अंक दिये जायें और पाठ्यक्रम में दिये गए छोटे ख्याल की स्वरलिपि में स्थाई व अंतरा लिखने पर पूरे अंक दिये जायें।

राग भीमप्लासी

थाट : काफी,

जातिः औडव–सम्पूर्ण

वादीः मध्यम (म)

संवादी : षड्ज (सा)

आरोहः नि़ सा ग म प नि सां।

अवरोहः सां नि ध प, म प ग म ग रे सा।

पकड़ : नि़ सा म, म प ग, म ग रे सा।

गायन समय : दिन का तीसरा प्रहर।

(अथवा) **(OR)**

राग खमाज का शास्त्रीय परिचय दें तथा एक ताल का एक व दो गुन लिखें।

राग खमाज

थाट : खमाज,

जातिः षाडव–सम्पूर्ण

वादीः गधांर (ग)

संवादी : निषाद (नि)

आरोहः सा ग म प ध नि सां।

अवरोहः सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़ : नि ध मपध, मग

गायन समय : रात्रि का दूसरा प्रहर।

Download from www.MsEducationTv.com

एक ताल का एक गुन

चिहन	X		0		2		0		3		4	
मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बेल	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तु	ना	क	ता	धागे	तिरकिट	धि	ना

एक ताल का दो गुन

चिहन	X		0		2		0		3		4	
मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बेल	धिंधिं	धागेतिरकिट	तुना	कता	धागेतिरकिट	धिना	धिंधिं	धागेतिरकिट	तुना	कता	धागेतिरकिट	धिना

नोट – दो गुन में सभी दो दो बोलो के नीचे अर्द्धचंद्र।

Download from www.MsEducationTv.com